B.A. History Hons Part-I

Paper: I, Unit: III, Date: 1.10.2020 Lecture No. 1

Lession: सातवाहनों की शासन पद्धति

आन्ध्र-सातवाहन राजवंश के शासनकाल से दक्षिण भारत का राजनीतिक इतिहास ही नहीं, सांस्कृतिक इतिहास का भी शुभ आरम्भ होता है। मौर्य के समय तक दक्षिण भारत महाश्म संस्कृति में ही जीवन यापन कर रहा था। मौर्य के समय में आन्ध्र, पुलिन्द, राष्ट्रिक, सतियपुत्त, केरलपुत्त और अनेक छोटी-बड़ी जन-जातियाँ निवास कर रही थीं। अशोक ने धम्म-प्रचार के माध्यम से इन जातियों का आर्यीकरण शुरू किया। आन्ध्र सातवाहन राजाओं ने उत्तर भारत में बौद्ध क्षत्रियों की विफलता और अहिंसक नीति की कमजोरी को देखते हुए शुंगों की परम्परा से ब्राह्मणवादी राजनीति ही नहीं, संस्कृति का भी अनुसरण किया और उसी के तहत दक्षिण भारत का आर्यीकरण प्रारम्भ किया, जिसके परिणामस्वरूप शक-पह्लव जैसे विदेशी को भी कमोबेश झुकना और सुरक्षित होना पड़ा। सातवाहन नरेश ने मौर्य साम्राज्य शासन-प्रबन्ध को ही अपनाया था, क्योंकि उन्हें मौर्य शासन में सेवा करने का अनुभव प्राप्त था।

अशोक की तरह सातवाहन राजा भी प्रजा को संतान मानते थे और प्रजा का कल्याण करना ही अपना धर्म-कर्म मानते थे। वैदिकवादी ब्राह्मण होने के कारण धर्मशास्त्रों में वर्णित राजा के आदर्श ही सातवाहन राजाओं के शासन निर्देश हुआ करते थे। सतकर्णी प्रथम ने दो अश्वमेध यज्ञ का सम्पादन किया था। अन्य सातवाहन राजा भी यज्ञ किया करते थे और ब्राह्मण को भूमिदान और श्रमण के लिये गुफा खुदवाते थे। सातवाहन राजतंत्र मातृ-प्रधान था। राजा के नाम के आगे माँ का नाम जुड़ा होता था। राजा के मरने पर रानी शासन का संचालन करती थी। भारत की प्रथम महिला शासिका सातवाहन वंश के राजा सतकर्णी प्रथम की विधवा रानी नायनिका हुई थी। सामान्य तौर पर राजा के बाद राजा का भाई या राजा का पुत्र उसका उत्तराधिकारी होता था। सातवाहन राजवंश में उत्तराधिकार का युद्ध नहीं देखा जाता है। सातवाहन शासन के शीर्ष पर राजा विराजमान रहता था। वह राजा नृप की उपाधि ग्रहण करता था।

गौतमी-पुत्र सातकर्णी को बलश्री के अभिलेख में 'राजाराज' की उपाधि से विभूषित किया गया है। डा॰ रोमिला थापर मानती हैं कि "सातवाहनों ने साम्राज्यीय उपाधियाँ ग्रहण नहीं की जिसका कारण शायद यह रहा होगा कि स्थानीय सरदारों तथा राजाओं पर उनका नियंत्रण उस प्रकार का नहीं था जो इन उपाधियों को युक्तिसंगत ठहरा सकता।" अतः सातवाहन का केन्द्रीभूत नहीं था, चूँकि उनकी साम्राज्य सीमा अस्थिर रहा करती थी। प्रतिष्ठान (पैठन) उनकी पैतृक राजधानी थी और पश्चिम भारत पर आधिपत्य होने पर नासिक को राजधानी बनाया जाता था। सातवाहन राजा ने किसी केन्द्रीय शासन की स्थापना की थी इसका प्रमाण नहीं मिलता है। उन्हें विभिन्न राजकीय कार्यों में अमात्य, सेनापति और स्थानीय सरदार-महारथी या महाभोज सहायता किया करते थे। सातवाहन अभिलेख में धर्म महामात्र की चर्चा आयी है। सातवाहन राजा ने वर्णाश्रम धर्म को भी समाज में लागू करवाने के लिए धर्म महामात्र को नियुक्त किया होगा। महारथी और महाभोज सातवाहन राजाओं को स्थानीय शासन में सहयोग देते थे। सेनापतियों का राजपरिवार में विवाह होता था, ताकि वह केन्द्र के प्रति वफादार रह सके। सातवाहन साम्राज्य छोटे-छोटे प्रान्तों में बँटा होता था, जिन्हें जनपद या आहार कहा जाता था।

सातवाहनों का जनपदीय शासन भी कई प्रकार का होता था। अपरान्त (कोंकण), गोवर्द्धन (नासिक), मामाद (पूना), वनवासी (कर्नाटक) और खडुवली सातवाहनों के दूरस्थ प्रान्त थे। इन प्रान्तों के प्रशासक को 'अमात्य' या 'महासेनी' कहा जाता था। चितलदुर्ग, नानाघाट, कार्ले और कन्हेरी पर सैनिक प्रशासक सेनापति नियुक्त होते थे। राजवंशों के साथ इनका वैवाहिक संबंध हुआ करता था। सातवाहन राजा अपने निजी साम्राज्य के प्रशासन को चलाने के लिए अलग से अमात्य नियुक्त करते थे, जिन्हें राजामात्य कहा जाता था। इस पद पर राजवंश के लोग भी नियुक्त किये जाते थे। सातवाहन अभिलेखों से पता चलता है कि कुछ अधिकारियों का नाम है - कोषपाल, कारीद, स्वर्णकार, महामात्र, लेखक, प्रवेसक, दूतक, भांडागारिका आदि। सातवाहन शासन काल की गांधा सप्तशती से पौर, ग्रामिणी, ग्राम सभा, निगम, श्रेणी, जाति और गण द्वारा स्थानीय शासन-संचालन का विवरण मिलता है। पौर नगर प्रशासन को कहा जाता था। हम निष्कर्ष तौर पर कह सकते हैं कि सातवाहन काल का शासन पद्धति समृद्ध एवं विरुद्ध शक्तिशाली साम्राज्य न था बल्कि एक सामरूप साम्राज्य था।

☐ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर।